2 अगस्त 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अमेरिका में अपूर्व धर्मप्रभावना

(1) शिकागो : यहाँ दिनांक 8 से 13 जून तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'मति अनुसार गति या गति अनुसार मति' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 22 से 28 जून तक डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा एवं दिनांक 5 से 12 जुलाई तक पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा पुरुषार्थसिद्धिचुपाय, निश्चयाभास, व्यवहाराभास, उभयाभास, अनेकान्त आदि विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(2) न्यूजर्सी : यहाँ दिनांक 14 से 20 जून तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'मति अनुसार गति या गति अनुसार मति' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) फीनिक्स : यहाँ दिनांक 24 से 27 मई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा गुणस्थान एवं चार अनुयोग विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही एक दिन णमोकार महामंत्र मंडल विधान का भी आयोजन किया गया।

(4) लॉस एंजिल्स : यहाँ दिनांक 5 से 9 जुलाई तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'गति अनुसार मति या मति अनुसार गति' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 28 से 31 मई तक डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: नित्य-नियम पूजन के अतिरिक्त दोनों समय 1.30-1.30 घंटे जिनागम के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) डलास : यहाँ दिनांक 11 से 27 जून तक अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 21 से 27 जून तक डॉ. भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर प्रवचन हुये। दिनांक 16 से 18 जून तक श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दोनों युवा विद्वानों द्वारा शिविर एवं पंचपरमेष्ठी मंडल विधान का भव्य आयोजन हुआ। पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा आरोग्य-बोधि-समाधि लाभ विषय पर मार्मिक प्रवचन एवं डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर द्वारा विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 18 जून को जिनेन्द्र-भक्ति एवं सायंकाल संजीवजी के प्रासंगिक विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

(6) राले-नॉर्थ कैरोलिना : यहाँ दिनांक 8 से 14 जून तक डॉ.

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त 2018 तक)

विद्वत्समागम – डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा आदि अनेक विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'आत्मानुभूति का उपाय' विषय पर विशेष व्याख्यान होंगे।

मुख्य शिविर आमंत्रणकर्ता - श्रीमान् प्रेमचंदजी बजाज एवं श्रीमती सुनीता बजाज परिवार, कोटा

शिविर आमंत्रणकर्ता - श्रीमान् महेन्द्रकुमारजी राहुलजी गंगवाल परिवार, जयपुर

भूलसुधार :- विगत अंक में प्रकाशित शिविर की आमंत्रण-पत्रिका में शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी राहुलजी गंगवाल परिवार का नाम हमारी भूलवश रह गया था, अत: हम क्षमाप्रार्थी हैं।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

14

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

३. चार काल के बोल में –

१. संयोग अनादि अनन्त हैं, किन्तु उनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

२. संयोगीभाव सादि-सान्त हैं, अतः वे क्षणिक-नाशवान हैं।

३. स्वभाव अनादि-अनन्त हैं।

४. स्वभाव के साधन सादि-सान्त हैं।

५. सिद्धत्व सादि-अनन्त है।

४. पाँचभाव के बोल में –

१. संयोग पाँच भावों में कोई भाव नहीं है।

२. संयोगीभाव औदयिकभाव है।

३. स्वभाव पारिणामिकभाव है।

४. स्वभाव के साधन औपशमिक, क्षायोपशमिक क्षायिकभाव हैं।

५. सिद्धत्व क्षायिक भाव हैं

५. सातत्त्वों के बोल में –

१. संयोग अजीव है।

२. संयोगीभाव आस्रव-बन्धतत्त्व हैं।

३. स्वभाव जीव है।

४. स्वभाव के साधन संवर-निर्जरा तत्त्व हैं।

५. सिद्धत्व मोक्ष तत्त्व है।

निष्कर्ष के पाँच बोल

१. आज तक परद्रव्य ने मेरा भला-बुरा किया ही नहीं, क्योंकि न परद्रव्य सुखदायक हैं, न दुःखदायक। आज तक मैंने भी परद्रव्य का भला-बुरा नहीं किया, अतः उठाओ संयोगों पर से दृष्टि।

२. आज तक मैंने संयोगों पर दृष्टि रखकर, संयोगी भाव करके हानि का ही व्यवसाय किया है। यदि हानि नहीं करना हो तो उठाओ संयोगी भावों पर से दृष्टि।

३. घबराने की कोई बात नहीं है; क्योंकि वह हानि पर्याय में ही हुई है, ध्रुव स्वभाव में नहीं। तथा ध्रुव स्वभाव के आश्रय से उस हानि को मेट कर अनंत लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सदैव स्वभाव का ही आश्रय व आराधना करने योग्य है।

४. हेय, ज्ञेय, उपादेय की दृष्टि से संयोग मात्र ज्ञेय हैं, संयोगीभाव हेय हैं और स्वभाव के साधन एकदेश उपादेय है तथा स्वभाव सर्वथा उपादेय हैं, अतः सब पर से दृष्टि हटाकर मात्र स्वभाव पर दृष्टि जमाओ।

५. सात तत्त्वों की दृष्टि से देखें तो **संयोग** अजीव तत्त्व हैं, अतः मात्र ज्ञेय हैं, **संयोगी भाव** आस्रव-बंध है, अतः हेय है, **स्वभाव** स्वयं जीवतत्त्व है, अतः उपादेय एवं ध्येय है। **स्वभाव के साधन** एकदेश उपादेय हैं। सिद्धत्व मोक्ष स्वरूप है। अतः यह भी उपादेय है, ध्येय है। इनका श्रद्धान और साधना करने से भवरोग से मुक्ति मिल जाती है।

सारांश यह है कि संयोग और संयोगी भाव सादि-सान्त हैं, इनका अभावकर अनादि-अनन्त स्वभाव के आश्रय से अनादि सान्त-विभाव का अभाव करके सादि अनन्त सिद्ध पर्याय प्रगट की जा सकती है। **(क्रमशः)**

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक द्वारा भेजे गये थे; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें।

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, मोबाइल-9785643202 (पीयूष जैन), 7742364541 (दशलक्षण पर्व विभाग) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री शांतिलालजी जैन अलवरवालों का दिनांक 23 जुलाई को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, टोडरमल स्मारक भवन में होने वाली स्वाध्याय सभा के दैनिक श्रोता थे। ज्ञातव्य है कि 2012 में ट्रस्ट द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आपने भगवान के पिता बनकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(2) टडा (म.प्र.) निवासी पण्डित कोमलचंदजी जैन का दिनांक 29 जुलाई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, सरल परिणामी एवं तत्त्वरसिक थे। आपने प्रशिक्षण शिविरों में कक्षाओं के माध्यम से अनेक वर्षों तक बालकों को लाभान्वित किया। आपके देहावसान से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

(3) लवाण-दौसा (राज.) निवासी श्री कपूरचंदजी जैन (अग्रवाल) का दिनांक 20 जून को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

दशलक्षण महापर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। संपर्क सूत्र – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.– 0141–2705581, 2707458, 7742364541 (दशलक्षण पर्व विभाग) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
6 से 13 सितम्बर	अध्यात्म स्टडी सर्किल मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
14 से 25 सित.	बेलगांव (कर्ना.)	दशलक्षण महापर्व
5 से 12 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
16 से 21 अक्टू.	पोन्नूर	तमिलानाडु तीर्थयात्रा

तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जनता कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में जैन स्वाध्याय मंडल द्वारा अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर वृहद् स्तर पर तत्त्वार्थसूत्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

विधान में मंगल कलश विराजमान श्रीमती मीना–सुभाषजी अजमेरा परिवार ने एवं ध्वजारोहण श्री बाबूलालजी सुरेशकुमारजी गंगवाल परिवार ने किया। विधान में जयपुर की अनेक कॉलोनियों से पधारे 200 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवजी गोधा के निर्देशन में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, वीकेशजी शास्त्री एवं दिव्यांश जैन अलवर द्वारा संपन्न कराये गये।

सायंकालीन विशेष कार्यक्रमों में जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त श्री एस.पी. भारिल्ल द्वारा '**दु:ख कहाँ**', श्री हर्षवर्धन जैन द्वारा '**धन का विज्ञान**' एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा '**खेल कर्मों का**' विषय पर सेमिनार किये गये। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन श्रीमती कुसुमजी चौधरी किशनगढ द्वारा विशेष कक्षा ली गई।

समस्त कार्यक्रम– समन्वयक श्री गौरव जैन के नेतृत्व में श्री उजासजी जैन, पण्डित राजेशजी शास्त्री, श्री पी.सी. छाबड़ा, सुनीलाजी गंगवाल, मीनाजी अजमेरा, चन्द्राजी जैन एवं नीलमजी जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 14 जुलाई को '**णमोकार मंत्र : एक अनुशीलन**' विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में संयम जैन गुढाचन्द्रजी, आयुष्मान जैन करेली (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण सोमिल जैन, खनियांधाना (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अतिशय जैन, इन्दौर व सिद्धार्थ जैन, लुकवासा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 22 जुलाई को श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र चंद्रगिरि बैनाड (जयपुर) में '**मोक्षमहल की प्रथम सीढी : सम्यग्दर्शन**' विषय पर साप्ताहिक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री एवं निर्णायक पण्डित चर्चितजी शास्त्री जयपुर थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में हितंकर जैन उदयपुर (उपाध्याय वर्ग) एवं अंकित जैन भगवा (शास्त्री वर्ग) रहे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सम्मेद पाटील (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विनीत जैन व अतिशय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रंथ भेंट गौरवजी शास्त्री और जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 29 जुलाई को 'वर्तमान शासन वीर शासन' विषय पर साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न हुई। वीरशासन पर्व के अनेक बिन्दुओं पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्ष के रूप में डॉ. नीतेशजी शाह दुबई उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ताओं में उपाध्याय वरिष्ठ से अभिषेक जैन देवरा, द्वितीय वर्ष से ममित जैन फुटेरा रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण सोहम शाह सोलापुर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया। संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन एवं दीपक जैन ने किया। ग्रंथभेंट एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

ब्रैम्पटन (कनाडा) में शिविर संपन्न

यहाँ दिनांक 29 जून से 4 जुलाई 2018 तक जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा आयोजित 18वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के स्वरचित नियमसार विधान की जयमाला पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा समयसार, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा सर्वज्ञ सिद्धि विषय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 30 जून को दिवंगत विद्वान डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनीवालों की समृति में शोक सभा आयोजित हुई, जिसमें डॉ. भारिल्ल सहित सभी विद्वानों के उद्बोधन हुये। इस प्रसंग पर **JAANA** के डायरेक्टर श्री अतुलजी खारा सहित नॉर्थ अमेरिका से पधारे हुये समस्त मुमुक्षुओं ने उनका उपकार स्मरण किया।

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (19)

परम्परा के अन्धानुकरण से आत्मकल्याण संभव नहीं

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

जैसा कि हम पूर्व लेख में चर्चा कर चुके हैं, महाविदेह क्षेत्र में 20 तीर्थंकर सदैव अरिहंत अवस्था में विराजमान रहते हैं और दिव्यध्वनि द्वारा निरन्तर उनका उपदेश चलता ही रहता है, तथापि तीन लोक में 6 महीने और 8 समय में मात्र 608 जीव ही मोक्ष जाते हैं।

यहाँ प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसा कैसे होता है?

तथ्य तो यह है कि "खोज ही खो गई है"।

जगत के अधिकतम जीव तो बस जहाँ खड़े हैं, वहीं मगन हैं। उनकी दृष्टि का दायरा स्वयं के चारों ओर मात्र कुछ सौ मीटर तक और मात्र कुछ ही वर्षों तक ही है, उनकी दुनिया मात्र इतनी ही है, इससे अधिक, इससे बाहर कुछ भी नहीं। **न तो क्षेत्र की दृष्टि से और न ही काल की दृष्टि से।** अपने आसपास का परिकर अनुकूल बना रहे और वर्तमान संभल जाए, वह भी मात्र सीमित परिप्रेक्ष्य में, बस! मात्र यही उनका लक्ष्य रहता है।

मुझे समझ ही नहीं आता है आखिर हम कैसे लोग हैं; हम बिना किसी प्रयत्न के अबुद्धिपूर्वक ही जहाँ पैदा हो गये बस बिना सोच विचार के ही वहीं के संस्कारों और विचारों को स्वीकार कर लेते हैं, उन्हीं को सच्चा मान बैठते हैं, उन्हीं के प्रति समर्पित हो जाते हैं, उन्हीं का प्रचार भी करने लगते हैं। आज एक संस्कृति और संस्कार वाले परिवार में उत्पन्न हुए तो उसमें रम गये, यदि उसके ठीक विपरीत संस्कार वाले परिवार में जाते तो वहाँ रम जाते। जब दोनों ही संस्कार एक दूसरे से सर्वथा विपरीत ही हैं तो दोनों तो सत्य हो नहीं सकते हैं, तब क्यों नहीं हम विवेकपूर्वक अपने लिये सही मार्ग चुनने का पुरुषार्थ करते हैं?

आखिर यह हमारे कल्याण का प्रश्न है, हम किस मार्ग पर चलें और आगे बढें, इसी पर हमारा हित और अहित निर्भर करता है, इसलिये **हमें इस मामले में अन्धानुकरण के बजाय परीक्षाप्रधानी होना चाहिये।**

जरा विचार तो कीजिये! बिना सोच-विचारे और सत्यं-शिवम् (कल्याणकारी) का निर्णय किये किसी एक व्यक्ति, विचार या धर्म-सम्प्रदाय का अनुसरण, समर्थन और प्रचार-प्रसार करने से आखिर हमें क्या लाभ है?

इसमें न तो हमारा ही कोई लाभ है और न ही उस किसी व्यक्ति या समुदाय (समाज, सम्प्रदाय) का, जिसका हम अनुसरण कर रहे हैं। ऐसा करके हम अपने समय, शक्ति और श्रम की बर्बादी ही तो करते हैं। इस सबका सबसे बड़ा नुकसान तो यह है कि हम सन्मार्ग पर आगे बढकर अपना कल्याण करने का एक दुर्लभ अवसर गंवा देते हैं। कौन जाने कि इस बार हाथ से निकल गया यह अवसर फिर दोबारा कब मिलेगा? मिलेगा भी या नहीं?

कोई अन्य क्या करता है, इस पर तो हमारा कोई नियंत्रण है नहीं पर अपने हित का विचार तो हमें स्वयं ही करना होगा न!

जरा विचार तो कीजिये कि **यह दुर्लभ मानव जीवन पाकर हमने अपने लिये क्या उपलब्धि हासिल की?**

यदि **हम सावधानीपूर्वक अपने विवेक से सच्चे और कल्याणकारी मार्ग का चुनाव करते तो अपने कल्याण के मार्ग पर आगे बढ जाते। इसके विपरीत हम गलत मार्ग पर आगे बढते हैं तो अपने लक्ष्य से, अपने कल्याण से, मुक्ति से दूर होते जा रहे हैं।** हमारा ध्यान गति की ओर तो है पर दिशा की ओर नहीं। हम आगे बढना चाहते हैं, तीव्र गति से आगे बढना चाहते हैं और इसलिये हम तेजी से दौड़ते हैं पर हम किस दिशा में दौड़ रहे हैं, इस बात की हमें खबर ही नहीं है। हममें से अधिकांश लोग बिना सोचे-विचारे विपरीत दिशा में तेजी से दौड़ रहे हैं और इसलिये निरंतर तेजी से अपने सुख और कल्याण के लक्ष्य से दूर होते जा रहे हैं। हमें इस बात की खबर ही नहीं है।

अरे भोले! तू अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा। भगवान आत्मा के इस अनादि-अनन्त जीवन में यह वर्तमान मनुष्यभव का काल समुद्र में चुल्लूभर पानी के समान नगण्य काल है। हमारे इस जीवन के जैसे जो नाते-रिश्ते या धर्म-सम्प्रदाय, समाज इत्यादि हैं, ऐसे असंख्य सम्बन्ध हम अब तक अपने पूर्वभवों में असंख्य लोगों के साथ स्थापित कर चुके हैं, जिनकी अब हमें स्मृति तक नहीं है, ठीक इसी प्रकार हमारी मृत्यु के पश्चात् हमारे इन वर्तमान सम्बन्धों का भी हमारे अपने लिये कोई महत्व नहीं रहेगा। इस अनन्त भवसागर में हमारे ये वर्तमान सम्बन्ध कहाँ खो जायेंगे और फिर कभी अनंतकाल तक भी नहीं मिलेंगे। ऐसे इन संयोगों के बहाव और प्रभाव में अपना यह मनुष्य जीवन नष्ट कर देना स्वयं अपने प्रति हमारा घातक अपराध है। बस इसीलिये तो निर्ग्रन्थ, वीतरागी, भावलिंगी संत अपने समस्त वर्तमान सम्बन्धों के बंधन तोड़कर, जगत से अलिप्त और निरपेक्ष होकर निजस्वरूप की साधना करते हैं, मात्र किसी की जयजयकार में अपना जीवन नष्ट नहीं करते हैं। भला किसी की जयजयकार करने से हमारा क्या भला हो सकता है और हम जैसे नादानों द्वारा जयजयकार करने से किसी और का भी क्या भला हो पायेगा? तब क्यों न हम जगत के समस्त दंदफंद छोड़कर आत्मकल्याण की ओर उन्मुख हों?

हमारे इस लम्बे मनुष्य जीवन में आखिर हमारी एक दिन की रेलयात्रा का क्या महत्व है, उस रेलयात्रा में मिले सहयात्रियों का क्या महत्व है? मात्र इतना ही न कि हम एक दिन के लिये मिले, प्रेम से बातें कीं, अपना और उनका मनोरंजन किया और अपने गंतव्य पर पहुंचकर फिर बिछुड़ गये, अब इस जीवन में दोबारा कभी भी न मिलने के लिये। अपने जीवन में हमने ऐसी अनेकों यात्राएं कीं और उनमें अनेकों लोग मिले, हम उनके साथ खेले-खाए पर क्या कोई ऐसे क्षणिक साथियों के प्रभाव में आकर अपनी जीवनधारा बदलता है? अरे! सचमुच तो हम ऊपरी तौर पर तो उनसे प्रेमभरी बातें करते हैं पर अंतरंग में उनके प्रति सशंक ही बने रहते हैं, वे हमारे हितों को कोई क्षति न पहुंचा पाएं, इस बात की सावधानी वर्तते हैं।

इस अनादि-अनन्त आत्मा के लिये यह एक मानव-जीवन हमारी एक दिन की रेलयात्रा के समान नगण्य ही तो है। **अब आप ही विचार करें कि अपनी इस जीवन यात्रा के संयोगों और साथियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण और व्यवहार कैसा होना चाहिये। क्या हम अपने आपको उनके हवाले करके अपने हितों के प्रति गाफिल (बेखबर) हो सकते हैं, क्या हमें परीक्षा-प्रधानी नहीं होना चाहिये?**

अरे! लोक में भी वे लोग अपने जीवन में आगे नहीं बढते हैं,

तरक्की नहीं करते हैं जो अपनी वर्तमान परिस्थितियों और आसपास के माहौल में ही उलझे रहते हैं, जिनके सामने दीर्घकालीन लक्ष्य और उसे प्राप्त करने का दृष्टिकोण नहीं होता है।

स्वयं प्रयत्न करके सच्चा मार्ग खोजने और तर्क एवं युक्ति का प्रयोग करके उसकी सच्चाई प्रमाणित करने का तरीका अपनाने के बजाय अनायास ही (कुल परम्परा से) जो मार्ग हाथ लग गया उस पर दौड़ पड़ने की प्रवृत्ति ही हमें संसार में भटकाने के लिये प्रमुख रूप से जिम्मेदार है।

यदि हमें सचमुच आत्मकल्याण करना है तो हमें अपना मार्ग स्वयं ही खोजना होगा। **(क्रमशः)**

वीरशासन जयंती संपन्न

दिल्ली : यहाँ शाह ऑडिटोरियम के विशाल हॉल में दिनांक 29 जुलाई को वीरशासन जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'सम्यक्त्व की प्राप्ति का उपाय' विषय पर प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, श्री सत्येन्द्रजी जैन (स्वास्थ्य मंत्री–दिल्ली) उपस्थित थे, जिन्होंने सभा को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल ने विभिन्न पहलुओं को स्पर्श करते हुए विस्तार से वीरशासन जयंती का महत्व समझाया।

इस अवसर पर डॉ. विवेकजी शास्त्री को पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त होने पर सम्मानित किया गया और डॉ. राकेशजी शास्त्री आदि विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में स्थानीय विद्वानों सहित अनेक साधर्मीजन उपस्थित थे।

इसके पूर्व दिनांक 28 जुलाई को रात्रि में दिगम्बर जैन मंदिर, विश्वास नगर के हॉल में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'आत्मानुभव की प्राप्ति कैसे होती है' विषय पर और ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचन का लाभ मिला।

आवश्यकता है !

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में –

(1) वार्डन की, (2) वैद्य, डॉक्टर की, (3) कार्यालय सहायक की जो कम्प्यूटर पर कम्पोजिंग व अकाउन्ट का कार्य कर सके। आवास व भोजन सुविधा उपलब्ध। वेतन योग्यतानुसार। **संपर्क–** मुन्नालाल जैन (मंत्री), 9406569839, डॉ. गुलाबचंद जैन (पूर्व मंत्री) 9893236368

शाश्वतधाम उदयपुर की –

नयी कार्यकारिणी गठित

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट की बैठक में नयी कार्यकारिणी का गठन हुआ, जिसका अन्तर्गत श्री अजितजी जैन बड़ौदा (अध्यक्ष), पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर (उपाध्यक्ष), श्री बृजलालजी जैन मुम्बई (महामंत्री), श्री आई.एस. जैन मुम्बई (कोषाध्यक्ष), डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (मंत्री), श्री ललितजी कीकावत (संयोजक) के रूप में चयनित हुये।

वेदी, शिखर व मानस्तंभ का शिलान्यास संपन्न

डासाला–बुलढाणा (महा.) : यहाँ दिनांक 2 जून व 3 जून को भगवान सीमंधर पंचकल्याणक विधान एवं श्री जिनमंदिर वेदी, श्री पंचबालयति शिखर मंदिर वेदी, शिखर तथा मानस्तंभ का भव्य शिलान्यास महोत्सव संपन्न हुआ।

दिनांक 2 जून को प्रात: श्री वीतराग कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु मंडल द्वारा ध्वजारोहण संपन्न हुआ। उसके पश्चात् श्री जिनेंद्र भगवान की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। श्री प्रकाशजी येनगुरे परिवार, लातूर के करकमलों से विधान मंडप का तथा श्री जिनदासजी भालेराव, पुणे द्वारा विधान मंच का उद्घाटन संपन्न हुआ। श्री सीमंधर भगवान पंचकल्याणक विधानकर्ता सौ. प्रणाली कुलभूषण अनंतराव वायकोस तथा सौ. राजश्री पवन माणिकचंद बेलोकर परिवार थे। श्री मोतीलाल पंचवाटकर परिवार रिसोड द्वारा मुख्य कलश स्थापित किया गया तथा श्रीमती शांतादेवी परिवार इसोली द्वारा जिनवाणी विराजमान की गई। रात्रि में वीतराग–विज्ञान पाठशाला डासाला व चिखली के बालक–बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

दिनांक 3 जून को प्रात: श्री अनंतराय अमुलखराय सेठ व सौ. कनकबेन सेठ परिवार के करकमलों से ध्वजारोहण संपन्न हुआ तथा श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला डासाला व चिखली के 100 से अधिक विद्यार्थियों द्वारा आकर्षक ध्वजगीत–नृत्य व लेझीमनृत्य प्रस्तुत किया गया। विधान के पश्चात् आयोजित शिलान्यास सभा में श्री अनंतराय सेठ द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति महिमामय उद्बोधन प्रगट किया गया। श्री कुंदकुंद कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट तथा श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र एवं ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री हर्षवर्धनजी जैन (गिरनार ग्रुप) औरंगाबाद की विशेष उपस्थिति रही।

श्री जिनमंदिर शिखर शिलान्यास श्री अनंतराय सेठ व सौ. कनकबेन सेठ तथा श्रीमती शारदाबेन शाह परिवार द्वारा संपन्न हुआ, वेदी का शिलान्यास श्री प्रेमचंदजी बजाज व श्रीमती सुनीताजी बजाज द्वारा तथा मानस्तंभ एवं श्री पंचबालयति शिखर वेदी शिलान्यास श्री मणिलालजी कारिया–जवेरबेन कारिया परिवार मुंबई तथा श्री नवीनचंद्र मेहता–मीनाक्षी बेन मेहता परिवार मुंबई द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी नाके शास्त्री, श्री अशोकजी जैन इंदौर, पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी टीकमगढ़, पण्डित उज्ज्वलजी बेलोकर शास्त्री, पण्डित जय मुळावकर, पण्डित अक्षत जैन एवं पण्डित शुभम जैन आदि विद्वानों की उपस्थिति रही।

सभी कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुए।

नवीन प्रकाशन

श्री पद्मनन्दि आचार्य विरचित 'श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका' ग्रंथ का तीसरा संस्करण श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर द्वारा प्रकाशित होने जा रहा है; विद्वानों से अनुरोध है कि वे उसके संशोधन में अपना बहुमूल्य सुझाव प्रेषित करें, स्वाध्यायार्थ आवश्यक प्रतियों की संख्या सूचित करें। **संपर्क सूत्र –** अशोक कुमार जैन (मंत्री), 07588740963

पिता का पुत्री को संदेश

(राजा उग्रसेन की अपनी बेटी राजुल को सीख)

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

राजुल बाबुल से कहे, नमकर बारंबार।
बाबुल अब मैं क्या करूँ, बोलो सोच विचार।।१।।

(पद्धरिका)

राजुल सोचे यों बार–बार,
मुझको दीक्षा धारण करना।
बाबुल से पूँछे बार–बार,
बोलो मुझको अब क्या करना।।
दीक्षा धारण करने के पहले,
बोलो मुझको क्या करना।
दीक्षा लेने के लिये मुझे,
बोलो तैयारी क्या करना।। २।।

तैयारी की कोइ बात नहीं,
धीरज धारो बेटी मन में।
दीक्षा लेना आसान नहीं,
जब तक न शान्ति हो जीवन में।।
जब तक न शान्ति हो जीवन में,
जब तक वैराग्य न जीवन में।
संयम की आश नहीं करना,
जब तक समभाव न जीवन में।।३।।

रे मात–पिता भाई–भगिनी,
पति से पत्नी से बच्चों से।
है रागभाव जब तक राजुल,
समभाव नहीं है जन–जन से।।
जब तक समभाव न जीवन में,
जब तक वैराग्य न जीवन में।
जब तक परिजन से रागभाव,
तब तक न संयम जीवन में।।४।।

नेमी नेमी रटती रहती,
वैराग्य नहीं है जीवन में।
आकुल–व्याकुल होती रहती,
है शान्ति न बिलकुल जीवन में।।
हैं नेमि तुम्हारे कोई नहीं,
उनको न निशदिन याद करो।
उनके चिन्तन में हे राजुल,
न जीवन यों बरबाद करो।। ५।।

वे नहीं तुम्हारे प्रेमी हैं,
तुम नहीं प्रेमिका हो उनकी।
वे नहीं मंगेतर हैं तेरे,
तुम नहीं मंगेतर हो उनकी।।
वे नहीं तुम्हारे पतिदेव,
न हुये कभी न होंगे अब।
तोड़ो विकल्प पति–पत्नी का,
सुख–शान्ति मिलेगी तुमको तब।। ६।।

पूरवभव की बातें छोड़ो,
उनमें अब कोई सार नहीं।
वे गये गये इस जीवन में,
उनका कोई आधार नहीं।।
इस भव में सब कुछ छोड़ गये,
अब आगे भव होंगे ही नहीं।
हमको अभाव भव का करना,
भव कोई अच्छी चीज नहीं।। ७।।

पूरव भव की चर्चा न करो,
अब वर्तमान की बात करो।
जब वर्तमान में छोड़ गये,
पूरव भव की क्या बात करो।।
जो भी संबंध रहे अब तक,
व्यवहार मात्र थे असद्भूत।
उपचार मात्र उनको जानों,
निश्चय से तो वे असद्भूत।। ८।।

अब नग्न दिगम्बर होने से,
वे तो गुरुराज तुम्हारे हैं।
वे नहीं तुम्हारे हैं केवल,
सबके हैं और हमारे हैं।।
वे परम पूज्य हैं हम सबके,
जगतीतल के उजियारे हैं।
उनकी महिमा का अन्त नहीं,
सबकी आँखों के तारे हैं।। ९।।

उनका तो है आदेश यही,
निज आत्मतत्त्व को पहिचानो।
जिनवाणी का स्वाध्याय करो,
जीवादिक तत्त्वों को जानो।।
निज आतम की पहिचान नहीं,
अब तक पर को अपना जाना।
पर में ही लीन रहा अब तक,
पर में ही अपना हित माना।। १०।।

अब स्वपर भेदविज्ञान करो,
जग को दो भागों में बाँटो।
षट्द्रव्यमयी इस दुनियाँ से,
केवल अपने को ही छाँटो।।
बस एक ओर केवल मैं हूँ,
है अन्य ओर सारी दुनियाँ।
बस एकमात्र मैं ज्ञायक हूँ,
अर ज्ञेय रही सारी दुनियाँ।। ११।।

केवल अपने में अपनापन,
ही सम्यग्दर्शन कहा अहा।
निज को निजरूप जानने को,
श्री जिनवर ने सद्ज्ञान कहा।।
निज में रमने को जमने को है,
सम्यग्चरित्र का नाम दिया।
यह ही है निश्चय मुक्ति मार्ग,
सर्वज्ञ देव ने बता दिया।। १२।।

इनको जानो निज को देखो,
यह शिक्षा की तैयारी है।
सबसे अपनेपन को तोड़ो,
यह दीक्षा की तैयारी है।।
यदि अपनापन रह गया कहीं,
तो उसको कैसे छोड़ोगी।
उससे यदि राग रहा किंचित्,
उससे कैसे मुख मोड़ोगी।। १३।।

यदि दीक्षा लेना इष्ट तुम्हें,
तो इस मारग को अपनाओ।
है यही एक निश्चय मारग,
इस पर आगे बढ़ती जावो।।
वन के मौसम के कष्टों पर,
न ध्यान धरो न घबराओ।
अपने में जावो हे राजुल,
जम जावो और समा जावो।। १४।।

(वैराग्य महाकाव्य के पन्द्रहवें अध्याय से साभार)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

संजीवजी गोधा द्वारा निश्चय-व्यवहार नय के भेद-प्रभेद एवं तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही एक दिन सीनियर सिटिजन ग्रुप में तथा एक दिन हिन्दी भाषी ग्रुप में आपका विशेष व्याख्यान हुआ। दिनांक 24 से 27 जून तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(7) क्लीवलैण्ड : यहाँ दिनांक 18 से 23 जून तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के उपाय, अनेकान्त-स्याद्वाद आदि विषयों पर प्रवचन हुये।

वैद्यरत्न के बाद एक और उपाधि

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं अध्यापक डॉ. दीपकजी जैन जयपुर को जनकपुरी-जयपुर जैन समाज द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में 25 वर्ष तक सेवाएं देने एवं हड्डियों की तकलीफों पर नवीन औषधि की खोज करने हेतु 'चिकित्सा-भूषण' उपाधि से सम्मानित किया गया।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का परिचय सम्मेलन–

नवपल्लव कार्यक्रम संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 15 जुलाई को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के सत्र 2018-19 का परिचय सम्मेलन 'नवपल्लव' के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

यह कार्यक्रम तीन सत्रों में संपन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। मंचासीन अतिथियों में ब्र. यशपालजी जैन, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ. संजीवजी गोधा, पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती परिणति जैन, कु. प्रतीति पाटील आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ में नवागन्तुक 36 छात्रों ने यहाँ आकर तत्त्वप्रचार की भावना व्यक्त करते हुए अपना परिचय दिया। साथ ही प्रत्येक कक्षा के चार छात्रों ने आकर अपनी कक्षा के हर छात्र का परिचय कराते हुए उनकी उपलब्धियों से भी परिचय कराया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय में आये हैं, यहाँ केवल विशुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान ही दिया जायेगा, आज की स्थिति में लोग कलेक्टर, डॉक्टर, इंजीनियर बनना चाहते हैं, उसके प्रयास में ही लगे रहते हैं; परन्तु जैनधर्म के विद्वान बनाने से कतराते हैं, परन्तु वे लोग ये जानते ही नहीं कि उन कार्यों में कितनी परतन्त्रता और बंधन है। आप सबने इस तत्त्वज्ञान के क्षेत्र को चुना है, आप सभी पवित्र भावनापूर्वक जीवनभर इसी क्षेत्र में लगे रहकर विशेषज्ञ बनें।

इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी, श्री परमात्मप्रकाशजी, पण्डित अरुणजी, डॉ. संजीवजी, डॉ. दीपकजी, पण्डित पीयूषजी, श्री अनेकान्तजी, पण्डित प्रमोदजी, पण्डित जिनकुमारजी, श्रीमती कमला भारिल्ल, कु. प्रतीति पाटील आदि ने भी छात्रों को उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में शास्त्री प्रथम वर्ष स्वर्णिम कक्षा द्वारा 'केवली को कवलाहार नहीं होता' विषय पर एक सुन्दर परिचर्चा संपन्न हुई। छात्रों की रचनाओं एवं महविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी से सहित सत्र 2017-18 की विद्यालय पत्रिका ''उदीयमान'' का विमोचन डॉ. भारिल्ल एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। वर्तमान में जयपुर में कार्यरत स्नातकों का परिचय पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री ने दिया।

कार्यक्रम का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सोमिल जैन दलपतपुर, अतिशय जैन इन्दौर, प्रतीक जैन विदिशा एवं सपन जैन सागर ने किया। मंगलाचरण शास्त्री तृतीय वर्ष के रजत जैन कापरेन एवं प्रशांत जैन ललितपुर ने किया।

ज्ञानोदय–भोपाल में –

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ विदिशा रोड़ पर स्थित दीवानगंज में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित तीर्थधाम ज्ञानोदय में वेदी प्रतिष्ठा एवं श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का मंगल शुभारम्भ दिनांक 6 से 8 जुलाई तक भव्य समारोहपूर्वक हुआ।

इस अवसर पर ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र.हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल, ब्र. श्रेणिकजी, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित पुनीतजी जैन भोपाल, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर आदि विद्वानों का समागम मिला। दिनांक 6 जुलाई को यागमंडल विधान एवं दिनांक 7 जुलाई को भगवान शीतलनाथ विधान, घटयात्रापूर्वक समवशरण वेदी शुद्धि एवं भ. शीतलनाथ की चार प्रतिमाओं की स्थापना की गई। दोपहर में समागत विद्वानों के सान्निध्य में 'व्यवहार रत्नत्रय का मोक्षमार्ग में स्थान' पर एवं रात्रि में ज्ञानोदय में नवागत विद्यार्थियों द्वारा 'णमोकार महामंत्र' विषय पर ज्ञानवर्धक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 8 जुलाई को ज्ञानोदय महाविद्यालय का शुभारम्भ श्री अनन्तराय ए.शेठ और श्री निमेषभाई शांतिलाल शाह परिवार मुम्बई की ओर से श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली द्वारा हुआ। समस्त कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री एवं रजनीभाई दोशी के निर्देशन में पूर्ण हुये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com